हबक्कूक

हबक्कूक की परमेश्वर से शिकायत

1 यह वह संदेश है जो हबक्कूक नबी को दिया
गया था।

2हे यहोवा, मैं निरतंर तेरी दुहाई देता रहता हूँ। तू
मेरी कब सुनेगा? मैं इस हिंसा के बारे में तेरे आगे
चिल्लाता रहा हूँ किन्तु तूने कुछ नहीं किया! 3लोग
लूट लेते हैं और दूसरे लोगों को हानि पहुँचाते हैं। लोग
वाद विवाद करते हैं और झगड़ते हैं। हे यहोवा! तू ऐसी
भयानक बातें मुझे क्यों दिखा रहा है? 4व्यवस्था असहाय
हो चुकी है और लोगों के साथ न्याय नहीं कर पा रही
है। दुष्ट लोग सज्जनों के साथ अपनी लड़ाईयाँ जीत रहे
हैं। सो, व्यवस्था अब निष्पक्ष नहीं रह गयी है!

हबक्कूक को परमेश्वर का उत्तर

5यहोवा ने उत्तर दिया, "दूसरी जातियों को देख! उन्हें
ध्यान से देख, तुझे आश्चर्य होगा। मैं तेरे जीवन काल में
ही कुछ ऐसा करूँगा जो तुझे चकित कर देगा। इस पर
विश्वास करने के लिये तुझे यह देखना ही होगा। यदि तुझे
उसके बारे में बताया जाये तो तू उस पर भरोसा ही नहीं
कर पायेगा। 6मैं बाबुल के लोगों को एक बलशाली जाति
बना दूंगा। वे लोग बड़े दुष्ट और शक्तिशाली योद्धा हैं। वे
आगे बढ़ते हुए सारी धरती पर फैल जायेंगे। वे उन घरों
और उन नगरों पर अधिकार कर लेंगे जो उनके नहीं है।
7बाबुल के लोग दूसरे लोगों को भयभीत करेंगे। बाबुल के
लोग जो चाहेंगे, सो करेंगे और जहाँ चाहेंगे, वहाँ जायेंगे।
8उनके घोड़े चीतों से भी तेज़ दौड़ने वाले होंगे और सूर्य
छिप जाने के बाद के भेड़ियों से भी अधिक खूंखार होंगे।
उनके घुड़सवार सैनिक सुदूर स्थानों से आयेंगे। वे अपने
शत्रुओं पर वैसे टूट पड़ेंगे जैसे आकाश से कोई भूखा गिद्ध
झपट्टा मारता है। 9वे सभी बस युद्ध के भूखे होंगे। उनकी
सेनाएँ मरुस्थल की हवाओं की तरह नाक की सीध में
आगे बढ़ेंगी। बाबुल के सैनिक अनगिनत लोगों को
बंदी बनाकर ले जायेंगे। उनकी संख्या इतनी बड़ी
होगी जितनी रेत के कणों की होती है।

10"बाबुल के सैनिक दूसरे देशों के राजाओं की
हँसी उड़ायेंगे। दूसरे देशों के राजा उनके लिए चुटकुले
बन जायेंगे। बाबुल के सैनिक ऊँचे सुदृढ़ परकोटे
वाले नगरों पर हँसेंगे। वे सैनिक उन अन्धे परकोटों
पर मिट्टी के दमदमे बांध कर उन नगरों को सरलता
से हरा देंगे। 11फिर वे दूसरे स्थानों पर युद्ध के लिये
उन स्थानों को छोड़ कर ऐसे ही आगे बढ़ जायेंगे जैसे
आंधी आती है और आगे बढ़ जाती है। बाबुल के वे
लोग बस अपनी शक्ति को ही पूजेंगे।"

परमेश्वर से हबक्कूक के प्रश्न

12फिर हबक्कूक ने कहा, "हे यहोवा, तू अमर
यहोवा है! तू मेरा पवित्र परमेश्वर है जो कभी भी
नहीं मरता! हे यहोवा, तूने बाबुल के लोगों को अन्य
लोगों को दण्ड देने को रचा है। हे हमारी चट्टान, तूने
उनको यहूदा के लोगों को दण्ड देने के लिये रचा है।

13"तेरी भली आँखें कोई दोष नहीं देखती हैं। तू
पाप करते हुए लोगों के नहीं देख सकता है। सो तू उन
पापियों की विजय कैसे देख सकता है? तू कैसे देख
सकता है कि सज्जन को दुर्जन पराजित करे?

14"तूने ही लोगों को ऐसे बनाया है जैसे सागर की
अनगिनत मछलियाँ जो सागर के छुद्र जीव हैं बिना
किसी मुखिया के।

15"शत्रु काँटे और जाल डाल कर उनको पकड़ लेता
है। अपने जाल में फँसा कर शत्रु उन्हें खींच ले जाता है
और शत्रु अपनी इस पकड़ से बहुत प्रसन्न होता है।

16"यह फंदे और जाल उसके लिये ऐसा जीवन
जीने में जो धनवान का होता है और उत्तम भोजन

खाने में उसके सहायक बनते हैं। इसलिये वह शत्रु अपने ही जाल और फंदों को पूजता है। वह उन्हें मान देने के लिये बलियाँ देता है और वह उनके लिये धूप जलाता है।

17"क्या वह अपने जाल से इसी तरह मछलियाँ बटोरता रहेगा? क्या वह (बाबुल की सेना) इसी तरह निर्दय लोगों का नाश करता रहेगा?

2 "मैं पहरे की मीनार पर जाकर खड़ा होऊँगा। मैं वहाँ अपनी जगह लूँगा और रखवाली करूँगा। मैं यह देखने की प्रतिक्षा करूँगा कि यहोवा मुझसे क्या कहता है। मैं प्रतिक्षा करूँगा और यह जान लूँगा कि वह मेरे प्रश्नों का क्या उत्तर देता है।"

परमेश्वर द्वारा हबक्कूक की सुनवाई

2यहोवा ने मुझे उत्तर दिया, "मैं तुझे जो कुछ दर्शाता हूँ, तू उसे लिख ले। सूचना शिला पर इसे साफ़–साफ़ लिख दे ताकि लोग आसानी से उसे पढ़ सकें। 3यह संदेश आगे आने वाले एक विशेष समय के बारे में है। यह संदेश अंत समय के बारे में है और यह सत्य सिद्ध होगा! ऐसा लग सकता है कि वैसा समय तो कभी आयेगा ही नहीं। किन्तु धीरज के साथ उसकी प्रतीक्षा कर। वह समय आयेगा और उसे देर नहीं लगेगी। 4यह संदेश उन लोगों की सहायता नहीं कर पायेगा जो इस पर कान देने से इन्कार करते हैं। किन्तु सज्जन इस संदेश पर विश्वास करेगा और अपने विश्वास के कारण सज्जन जीवित रहेगा।

5परमेश्वर ने कहा, "दाखमधु व्यक्ति को भरमा सकती है। इसी प्रकार किसी शक्तिशाली पुरुष को उसका अहंकार मूर्ख बना देता है। उस व्यक्ति को शांति नहीं मिलेगी। मृत्यु के समान कभी उसका पेट नहीं भरता, वह हर समय अधिक से अधिक की इच्छा करता रहता है। मृत्यु के समान ही उसे कभी तृप्ति नहीं मिलेगी। वह दूसरे देशों को हराता रहेगा। वह दूसरे देशों के उन लोगों को अपनी प्रजा बनाता रहेगा। 6निश्चय ही, ये लोग उसकी हँसी उड़ाते हुये यह कहेंगे, 'उस पर हाय पड़े जो इतने दिनों तक लूटता रहा है। जो ऐसे उन वस्तुओं को हथियाता रहा है जो उसकी नहीं थी! जो कितने ही लोगों को अपने कर्ज के बोझ तले दबाता रहा है।'

7"हे पुरुष, तूने लोगों से धन ऐंठा है। एक दिन वे लोग उठ खड़े होंगे और जो कुछ हो रहा है, उन्हें उसका अहसास होगा और फिर वे तेरे विरोध में खड़े हो जायेंगे। तब वे तुझसे उन वस्तुओं को छीन लेंगे। तू बहुत भयभीत हो उठेगा। 8तूने बहुत से देशों की वस्तुएं लूटी हैं। सो वे लोग तुझसे और अधिक लेंगे। तूने बहुत से लोगों की हत्या की है। तूने खेतों और नगरों का विनाश किया है। तूने वहाँ सभी लोगों को मार डाला है। 9हाँ! जो व्यक्ति बुरे कामों के द्वारा धनवान बनता है, उसका यह धनवान बनना, उसके लिये बहुत बुरा होगा। ऐसा व्यक्ति सुरक्षापूर्वक रहने के लिये ऐसे काम करता है। वह सोचा करता है कि वह उसकी वस्तुएं चुराने से दूसरे व्यक्तियों को रोक सकता है। किन्तु बुरी बातें उस पर पड़ेंगी ही।

10"तूने बहुत से लोगों के नाश की योजनाएँ बना रखी हैं। इससे तेरे अपने लोगों की निन्दा होगी और तुझे भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। 11तेरे घर की दीवारों के पत्थर तेरे विरोध में चीख–चीख कर बोलेंगे। यहाँ तक कि तेरे अपने ही घर की छत की कड़ियाँ यह मानने लगेंगी कि तू बुरा है।

12"हाय पड़े उस बुरे अधिकारी पर जो खून बहाकर एक नगर का निर्माण करता है और दुष्टता के आधार पर चहारदीवारी से युक्त एक नगर को सुदृढ़ बनाता है। 13सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह ठान ली है कि उन लोगों ने जो कुछ बनाया था, उस सब कुछ को एक आग भस्म कर देगी। उनका समूचा श्रम बेकार हो जायेगा। 14फिर सब कहीं के लोग यहोवा की महिमा को जान जायेंगे और इसका समाचार ऐसे ही फैल जायेगा जैसे समुद्र में पानी फैला हो। 15उस पर हाय पड़े जो अपने क्रोध में लोगों को उन्हें अपमानित करने के लिये मारता–पीटता है और उन्हें तब तक मारता रहता है जब तक वे लड़खड़ा न जाये. और फिर दाखमधु में धुत्त हुए से गिर न जायें।

16"किन्तु उसे यहोवा के क्रोध का पता चल जायेगा। वह क्रोध विष के एक ऐसे प्याले के समान होगा जिसे यहोवा ने अपने दाहिने हाथ में लिया हुआ है। उस व्यक्ति को उस क्रोध के विष को चखना होगा और फिर वह किसी धुत्त व्यक्ति के समान धरती पर गिर पड़ेगा।

"ओ दुष्ट शासक, तुझे विष के उसी प्याले में से पीना होगा। तेरी निन्दा होगी। तुझे आदर नहीं मिलेगा।

17लबानोन में तूने बहुत से लोगों की हत्या की है। तूने
वहाँ बहुत से पशु लूटे हैं। सो तू जो लोग मारे गये थे,
उनसे भयभीत हो उठेगा और तूने उस देश के प्रति
जो बुरी बातें की; उनके कारण तू डर जायेगा। उन
नगरों के साथ और उन नगरों में रहने वाले लोगों के
साथ जो कुछ तूने किया, उससे तू डर जायेगा।"

मूर्तियों की निरर्थकता का सन्देश

18उसका यह झूठा देवता, उसकी रक्षा नहीं कर पायेगा
क्योंकि वह तो बस एक ऐसी मूर्ति है जिसे किसी मनुष्य
ने धातु से मढ़ दिया है। वह मात्र एक मूर्ति है। इसलिए जो
व्यक्ति स्वयं उसका निर्माता है, उससे सहायता की अपेक्षा
नहीं कर सकता। वह मूर्ति तो बोल तक नहीं सकता!
19धिक्कार है उस व्यक्ति को जो एक कठपुतली से कहता
है–"ओ देवता, जाग उठ!" उस व्यक्ति को धिक्कार है
जो एक ऐसी पत्थर की मूर्ति से जो बोल तक नहीं पाती,
कहता है, "ओ देवता, उठ बैठ!" क्या वह कुछ बोलेगी
और उसे राह दिखाएगी वह मूर्ति चाहे सोने से मढ़ा हो,
चाहे चाँदी से, किन्तु उसमें प्राण तो है ही नहीं।

20किन्तु यहोवा इससे भिन्न है! यहोवा अपने पवित्र
मन्दिर में रहता है। इसलिए यहोवा के सामने सम्पूर्ण
पृथ्वी धरती को चुप रह कर उसके प्रति आदर प्रकट
करना चाहिए।

हबक्कूक की प्रार्थना

3 हबक्कूक नबी के लिये शिग्योनीत प्रार्थना:
2हे यहोवा, मैंने तेरे विषय में सुना है। हे यहोवा,
बीते समय में जो शक्तिपूर्ण कार्य तूने किये थे, उनपर
मुझको आश्चर्य है। अब मेरी तुझसे विनती है कि
हमारे समय में तू फिर उनसे भी बड़े काम कर। मेरी
तुझसे विनती है कि तू हमारे अपने ही दिनों में उन
बातों को प्रकट करेगा किन्तु जब तू जोश में भर जाये
तब भी तू हम पर दया को दर्शाना याद रख।

3परमेश्वर तेमान की ओर से आ रहा है। वह पवित्र
परान के पहाड़ से आ रहा है। आकाश प्रतिबिंबित
तेज से भर उठा। धरती पर उसकी महिमा छा गई है!

4वह महिमा ऐसी है जैसे कोई उज्जवल ज्योति हो।
उसके हाथ से ज्योति की किरणें फूट रही हैं और
उसके हाथ में उसकी शक्ति छिपी है।

5उसके सामने महामारियाँ चलती हैं और उसके
पीछे विध्वंसक नाश चला करता है।

6यहोवा खड़ा हुआ और उसने धरती को कँपा
दिया। उसने अन्य जातियों के लोगों पर तीखी दृष्टि
डाली और वे भय से काँप उठे। जो पर्वत अनन्त
काल से अचल खड़े थे, वे पर्वत टूट–टूट कर गिरे
और चकनाचूर हो गये। पुराने, अति प्राचीन पहाड़
ढह गये थे। परमेश्वर सदा से ही ऐसा रहा है!

7मुझको ऐसा लगा जैसे कुशान के नगर दुःख में हैं।
मुझको ऐसा दिखा जैसे मिद्यान के भवन डगमगा गये हों।

8हे यहोवा, क्या तूने नदियों पर कोप किया? क्या
जलधाराओं पर तुझे क्रोध आया था? क्या समुद्र तेरे
क्रोध का पात्र बन गया? जब तू अपने विजय के घोड़ों
पर आ रहा था और विजय के रथों पर चढ़ा था, क्या
तू क्रोध से भरा था?

9तूने अपना धनुष ताना और तीरों ने अपने लक्ष्य
को बेध दिया। जल की धाराएँ धरती को चीरने के
लिए फूट पड़ी।

10पहाड़ों ने तुझे देखा और वे काँप उठे। जल धरती
को फोड़ कर बहने लगा था। धरती से ऊँचे फव्वारे
गहन गर्जन करते हुए फूट रहे थे।

11सूर्य और चाँद ने अपना प्रकाश त्याग दिया।
उन्होंने जब तेरी भव्य बिजली की कौंधों को देखा, तो
चमकना छोड़ दिया। वे बिजलियाँ ऐसी थी जैसे भाले
हों और जैसे हवा में छुटे हुए तीर हों।

12क्रोध में तूने धरती को पाँव तले रौंद दिया और
देशों को दण्डित किया।

13तू ही अपने लोगों को बचाने आया था। तू ही
अपने चुने राजा को विजय की राह दिखाने को आया
था। तूने प्रदेश के हर बुरे परिवार का मुखिया, साधारण
जन से लेकर अति महत्वपूर्ण व्यक्ति तक मार दिया।

14उन सेना नायकों ने हमारे नगरों पर तूफान की
तरह से आक्रमण किया। उनकी इच्छा थी कि वे हमारे
असहाय लोगों को जो गलियों के भीतर वैसे डर छुपे बैठे हैं
जैसे कोई भिखारी छिपा झुका खाता है खाना कुचल डाले।
किन्तु तूने उनके सिर को मुगदर की मार से फोड़ दिया।

15किन्तु तूने सागर को अपने ही घोड़ों से पार किया
था और तूने महान जल निधि को उलट–पलट कर
रख दिया।

16मैंने ये बातें सुनी और मेरी देह काँप उठी। जब मैंने
महा–नाद सुना, मेरे होंठ फड़फड़ाने लगे! मेरी हड़ियाँ
दुर्बल हुई। मेरी टाँगे काँपने लगीं। इसीलिये धैर्य के साथ
मैं उस विनाश के दिन की बाट जोहूँगा। ऐसे उन लोगों
पर जो हम पर आक्रमण करते हैं, वह दिन उतर रहा है।

यहोवा में सदा आनन्दित रहो

17अंजीर के वृक्ष चाहे अंजीर न उपजायें, अंगूर
की बेलों पर चाहे अंगूर न लगें, वृक्षों के ऊपर चाहे
जैतून न मिलें और चाहे ये खेत अन्न पैदा न करें,
बाड़ों में चाहे एक भी भेड़ न रहे और पशुशाला पशुधन
से खाली हों।

18किन्तु फिर भी मैं तो यहोवा में मग्न रहूँगा। मैं
अपने रक्षक परमेश्वर में आनन्द लूँगा।

19यहोवा, जो मेरा स्वामी है, मुझे मेरा बल देता है।
वह मुझ को वेग से हिरण सा भागने में सहायता देता
है। वह मुझ को सुरक्षा के साथ पहाड़ों के ऊपर ले
जाता है।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html